प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक की रचना माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा सैकण्डरी एवं हायर सैकण्डरी कक्षाओं हेतु स्वीकृत नवीन पाठ्यक्रमानुसार की गई है। इसमें बोर्ड द्वारा निर्धारित हिन्दी व्याकरण, निबन्ध तथा रचना के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का समावेश किया गया है।

इस पुस्तक को दो प्रकरणों में विभक्त किया गया है। व्याकरण एवं भाषा-ज्ञान से सम्बन्धित ये आठ अध्याय हैं—शब्द-ज्ञान, पदान्वय, शब्द-रचना, वाक्य-विश्लेषण, विराम-चिह्न, शब्द-भेद, लोकोक्तियां और मुहावरे तथा अशुद्धि-संशोधन।

द्वितीय अर्थात् रचना-बोध प्रकरण के अन्तर्गत पत्र-लेखन, तार-लेखन, निबन्ध-लेखन, अपठित संचय तथा संक्षिप्तीकरण शीर्षक पांच अध्याय हैं। इस तरह निबन्ध तथा रचना से सम्बन्धित सम्पूर्ण सामग्री इस प्रकरण में है।

व्याकरण से सम्बन्धित सामग्री अधिकाधिक उदाहरणों सहित प्रस्तुत की गई है, ताकि विद्यार्थी सरलता से उसका ज्ञान प्राप्त कर सके। प्रत्येक अध्याय के अन्त में नवीन शैली की विस्तृत अभ्यास-मालाएँ दी गई हैं। वस्तुनिष्ठ एवं लघूत्तरात्मक प्रश्नों का अधिकाधिक समावेश करने का प्रयास किया गया है। अभ्यास-मालाओं के माध्यम से व्याकरण एवं रचना-सम्बन्धी विषयों का अध्ययन-अध्यापन सरलता से किया जा सकता है।

पत्र-लेखन में दैनिक पत्र-व्यवहार से सम्बन्धित व्यक्तिगत पत्र, बधाई-पत्र, निमन्त्रण पत्र, आवेदन पत्र एवं शिकायती पत्र आदि को सम्मिलित किया गया है। निबन्ध लेखन में वर्णनात्मक और विवरणात्मक निबन्ध दिये गये हैं। कुछ साहित्यिक निबन्धों का भी इसमें

समावेश किया गया है। विद्यार्थियों के योग्यता-स्तर के अनुरूप विविध विषयों के रुचिपूर्ण निबन्ध नयी शैली से लिखे गये हैं। अपठित संचय तथा संक्षिप्तीकरण शीर्षक अध्याय अनेक उदाहरणों तथा अभ्यास हेतु अवतरण सहित दिए गए हैं।

आशा है, प्रस्तुत पुस्तक से विद्यार्थियों की रचना-सम्बन्धी अभिव्यक्ति, मौलिकता एवं सर्जनात्मक लेखन-वृत्ति को निखरने का अवसर मिलेगा। हमारे परिश्रम की सफलता इसी में निहित है।

लेखक-त्रय

हायर सैकण्डरी परीक्षा की कक्षा ११ के लिए पाठ्यक्रम

अनिवार्य हिन्दी

१. व्याकरण (कहावतें, मुहावरे, अशुद्धि-संशोधन, पर्यायवाची शब्द, संधि, पद-व्याख्या, वाक्य-विश्लेषण, विराम-चिह्नों का प्रयोग)

२. रचना (अ) लिखित निबन्ध (वर्णनात्मक और विवरणात्मक)

(आ) तार व पत्र-लेखन (बधाई-पत्र, तार, निमन्त्रण-पत्र, आवेदन व शिकायती पत्र)

३. अपठित (गद्य तथा पद्य के केवल ऐसे अंश ही दिये जावेंगे, जो सम्पूर्ण अर्थ रखते हों।

विशेष हिन्दी

१. व्याकरण (पद व्याख्या, वाक्य-विश्लेषण, कहावतें, मुहावरे, समास, कारक, संधि)

२. निबन्ध

३. छंद तथा अलंकार

छंद : कक्षा ९ व १० में प्रस्तावित के साथ-साथ रोला, उल्लाला, छप्पय, कुण्डलिया, मालिनी और मंदाक्रान्ता।

अलंकार : कक्षा ९ व १० में प्रस्तावित के साथ-साथ वक्रोक्ति, अनन्वय, सन्देह, भ्रांतिमान्, दृष्टान्त, अतिशयोक्ति एवं अन्योक्ति।

विषय-सूची

प्रथम प्रकरण

अध्याय १

शब्द-ज्ञान

अध्याय २

पदान्वय

अध्याय ७

लोकोक्तियां और मुहावरे

अध्याय ८

अशुद्धि संशोधन (शुद्ध रचना)

द्वितीय प्रकरण

रचना - बोध

०

अध्याय ९

पत्र-लेखन

अध्याय १०

तार-लेखन

अध्याय ११

निबन्ध-लेखन

अध्याय १२

अपठित संचय

अध्याय १३

संक्षिप्तीकरण

१

शब्द-ज्ञान

१. वर्ण-परिचय

मानव एक विचारशील प्राणी है। वह अपने विचारों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से करता है। भाषा का अर्थ है—जो बोली जाए। इस प्रकार बोले जाने वाले पदों और वाक्यों के समूह को एक निश्चित और व्यवस्थित रूप दिये जाने पर उसे 'भाषा' शब्द से अभिहित किया जाता है। वाक्यों का निर्माण पदों से होता है और पद-निर्माण मूल ध्वनियों या वर्ण-समूह से किया जाता है। वर्ण-समूह को वर्ण-माला की संज्ञा दी गई है।

वर्णमाला

स्वर—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ = ११

व्यंजन—क वर्ग—क, ख, ग, घ, ङ

च वर्ग—च, छ, ज, झ, ञ

ट वर्ग—ट, ठ, ड, ढ, ण

त वर्ग—त, थ, द, ध, न

प वर्ग—प, फ, ब, भ, म

अन्तःस्थ—य, र, ल, व

ऊष्म—श, ष, स, ह = ३३

संयुक्ताक्षर— क्ष = क् + ष

त्र = त् + र

ज्ञ = ज् + ञ

विशेष वर्ण—अनुस्वार (ं), चन्द्र बिन्दु (ँ), विसर्ग (:)

वर्ण दो प्रकार के होते हैं—स्वर और व्यंजन।

वर्ण वस्तुतः ध्वनियों के लिखित प्रतीक होते हैं।

वर्ण-विवेचन

स्वर—जिन वर्णों का उच्चारण अन्य किसी वर्ण की सहायता के बिना किया जा सके, उन्हें स्वर कहते हैं। व्यंजनों के उच्चारण में भी स्वर सहायक होते हैं। स्वर दो प्रकार के होते हैं—

१. मूल स्वर—ये वे स्वर-ध्वनियां है, जिनके उच्चारण में अन्य स्वरों का योग नहीं होता है। ये हैं—अ, इ, उ, ऋ।

२. संयुक्त स्वर—दो मूल स्वरों के योग को संयुक्त स्वर कहते हैं। इनके उच्चारण में मूल स्वर की अपेक्षा अधिक समय लगता है। ये सयुक्त स्वर निम्नांकित हैं—

आ = अ + अ
ई = इ + इ
ऊ = उ + उ
ए = अ + इ
ऐ = अ + ए
ओ = अ + उ
औ = अ + ओ

व्यंजन—व्यंजन वे वर्ण हैं, जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है। व्यंजनों को उच्चारण-स्थल के आधार पर निम्नांकित प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है—

१. कण्ठ्य—वे व्यंजन जिनका उच्चारण कण्ठ से होता है। जैसे—क, ख, ग, घ, ह।

२. तालव्य—वे व्यंजन जिनका उच्चारण तालु पर जिह्वा के स्पर्श से होता है। जैसे—च, छ, ज, झ, य और श।

३. मूर्द्धन्य—वे व्यंजन जिनका उच्चारण मूर्द्धा (कठोर तालु) पर जिह्वा के स्पर्श से होता है। जैसे—ट, ठ, ड, ढ, र और ष।

४. दन्त्य—वे व्यंजन जिनका उच्चारण ऊपर के दांतों पर जिह्वा के स्पर्श से होता है। जैसे—त, थ, द, ध, ल, स।

५. ओष्ठ्य—वे व्यंजन जिनके उच्चारण में दोनों ओठ मिल जाते हैं। जैसे—प, फ, ब, भ।

६. दन्त्योष्ठ्य—वे व्यंजन जिनका उच्चारण करने में ऊपर के दांत झटके के साथ नीचे के ओठ का स्पर्श करके हट जाते हैं। जैसे—व।

७. अनुनासिक—वे व्यंजन जिनका उच्चारण मुख और नासिक दोनों से होता है। जैसे—ङ, ञ, ण, न, म।

इसी प्रकार स्वरों तथा विशेष वर्णों का भी उच्चारण-स्थल की दृष्टि से वर्गीकरण किया जाता है—

१. कण्ठ से उच्चरित स्वर—अ, आ।

२. तालु से उच्चरित स्वर—इ, ई।

३. ओष्ठ से उच्चरित स्वर—उ, ऊ।

४. मूर्द्धा से उच्चरित स्वर—ऋ।

५. कण्ठ-तालु से उच्चरित स्वर—ए, ऐ।

६. कण्ठ और ओष्ठ से उच्चरित स्वर—ओ, औ।

अनुनासिक वर्ण—अनुस्वार (ं), चन्द्र बिन्दु (ँ)

काकल्य वर्ण—विसर्ग (:)। इसका निजी उच्चारण-स्थल नहीं होता। जिस वर्ण के आगे विसर्ग जुड़ता है, उसी का उच्चारण-स्थल विसर्ग का भी उच्चारण-स्थल होता है।

अल्पप्राण-महाप्राण और अघोष-सघोष

जिन व्यंजनों के उच्चारण में कम प्राणवायु का प्रयोग होता है, उन्हें अल्पप्राण कहा जाता है। जैसे—क, ग, च, ज, ट, ड, त, द, प, ब, य, र, ल, व। इसी प्रकार अधिक प्राणवायु से उच्चरित व्यंजन महाप्राण कहलाते हैं। जैसे—ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष, स, ह।

जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कम्पन नहीं होता, उन्हें अघोष कहा जाता है। जैसे—क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ।

इसी प्रकार जिनके उच्चारण में स्वर-तंत्रियों के निकट आ जाने से उनके बीच निकलती हवा से उनमें कम्पन होता है, उन्हें सघोष व्यंजन कहते हैं। जैसे—ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, ब, भ।

प्रयत्न-भेद और व्यंजनों का वर्गीकरण

प्रयत्न-भेद की दृष्टि से भी व्यंजनों का वर्गीकरण किया जाता है। जैसे—

१. **स्पर्श व्यंजन**—जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जिह्वा द्वारा विभिन्न स्थानों का स्पर्श किया जाता है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। जैसे—क वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग और प वर्ग के प्रथम चारों व्यंजन।

२. **संघर्ष व्यंजन**—जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय सीटी की सी ध्वनि निकलती है, वे संघर्ष व्यंजन कहलाते हैं। जैसे—श, ष, स, ह।

३. **स्पर्श संघर्ष व्यंजन**—जिन व्यंजनों के उच्चारण करने में स्पर्श और संघर्ष दोनों हों, उन्हें स्पर्श संघर्ष व्यंजन कहा जाता है। जैसे—च, छ, ज और झ।

४. **अनुनासिक**—नासिका द्वारा बोले जाने वाले व्यंजन अनुनासिक कहलाते हैं। जैसे—ङ, ञ, ण, न, म।

५. **अर्द्धस्वर**—जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय स्वर का सा आभास मिले, उन्हें अर्द्ध-स्वर व्यंजन कहते हैं। जैसे—य और व। इन ध्वनियों में 'अ' के साथ क्रमशः 'इ' और 'उ' का संयोग होता है।

६. **लुंठित**—जिस व्यंजन के उच्चारण में जिह्वा को कुछ वेलन की तरह चक्कर खाना पड़ता है, उन्हें लुंठित व्यंजन कहते हैं। जैसे—र। पहले इसे अर्द्ध-स्वर मानते थे, क्योंकि 'ऋ' और 'अ' के मेल से इसका उद्गम होता है।

७. **पार्श्विक**—जिस व्यंजन के उच्चारण में वायु जीभ के अगल-बगल से निकल जाती है, उसे पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। जैसे—ल। इसे भी पहले अर्द्ध-स्वर माना जाता था, क्योंकि इसका उद्गम 'लृ' और 'अ' के संयोग से हुआ था।

८. **उत्क्षिप्त**—जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा मूर्द्धा को जोर से टक्कर मारकर एकदम वापिस लौट आती है, उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते हैं। जैसे—ड़ और ढ़।

अभ्यास

१. वर्ण से क्या तात्पर्य है ?

२. स्वर और व्यंजन की परिभाषा देते हुए उनका अन्तर बताइए।

३. क्ष, त्र, ज्ञ किन वर्णों के संयोग से बने हैं ?

४. निम्नलिखित वर्णों का उच्चारण-स्थल बताओ—
अ, इ, ऋ, ख, घ, च, ड, प, ल, ह, य, र, म।

५. निम्नलिखित व्यंजनों में से अल्पप्राण और सघोष व्यंजन बताइए—
ग, झ, ध, फ, श, ह, भ, ब।

२. शब्द-विवेचन

शब्द की परिभाषा—एक या अनेक वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं। इस परिभाषा के अनुसार शब्द की तीन विशेषताएं हैं—

१. शब्द एक या एक से अधिक वर्णों का समूह होता है।

२. शब्द अर्थवान् होता है।

३. शब्द स्वतन्त्र इकाई होता है।

टिप्पणी—अर्थ की दृष्टि से शब्द दो प्रकार के होते हैं—सार्थक शब्द और निरर्थक शब्द। वस्तुत: सार्थक शब्द ही महत्त्वपूर्ण हैं और उन्हीं का व्याकरण में विवेचन किया जाता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वाक्य में प्रयुक्त होने वाले सार्थक शब्द को ही पद कहते हैं।

शब्द-भेद—रूप-परिवर्तन एवं वाक्य में प्रयोग के अनुसार शब्द दो प्रकार के होते हैं—

१. विकारी शब्द—वे शब्द या पद जिनमें लिंग, वचन और काल के अनुसार विकार उत्पन्न होता है, अर्थात् जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन तथा काल के अनुसार बदल जाता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं—

(१) संज्ञा (२) सर्वनाम (३) विशेषण (४) क्रिया।

२. अविकारी शब्द—जिन शब्दों में वचन, लिंग और काल के अनुसार

कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। इन्हें 'अव्यय' भी कहते हैं। अव्यय चार प्रकार के होते हैं—(१) क्रिया विशेषण (२) समुच्चयबोधक (३) सम्बन्धबोधक (४) विस्मयादिबोधक ।

३. संज्ञा

किसी वस्तु, व्यक्ति, पदार्थ, गुण, या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे—कलम, पुस्तक, हरीश, शीला, दूध, पानी, लम्बाई, सुन्दरता, बीकानेर, भारतवर्ष आदि। संज्ञा तीन प्रकार की होती है—

१. व्यक्तिवाचक संज्ञा—जिस संज्ञा से एक जाति की एक वस्तु अथवा एक व्यक्ति का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—रमेश, सीता, हिमालय, गंगा, अजमेर, भारतवर्ष, अकबर, कमल आदि।

विशेष—ऊपर जो नाम व्यक्तिवाचक संज्ञा के उदाहरण के रूप में दिये गये हैं, वे सब एक ही वस्तु, व्यक्ति या स्थान का बोध कराते हैं। रमेश किसी विशेष व्यक्ति, हिमालय किसी विशेष पर्वत, अजमेर किसी विशेष नगर और कमल किसी विशेष फूल का नाम है। इसीलिए ये सब व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द हैं।

२. जातिवाचक संज्ञा—जिस संज्ञा से एक जाति या वर्ग की सभी वस्तुओं का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—लड़का, पर्वत, नदी, नगर, देश, राजा, फूल, पक्षी आदि।

विशेष—जातिवाचक संज्ञा के उदाहरण-स्वरूप दिये गये सभी शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु-विशेष का बोध न करा कर, उस जाति या वर्ग के समस्त व्यक्तियों, वस्तुओं एवं पदार्थों का बोध कराते हैं। जैसे-हिमालय शब्द जहां किसी विशेष पर्वत का बोध कराता है, वहां 'पर्वत' शब्द उन सम्पूर्ण पर्वतों का बोध कराता है, जिनकी गणना पर्वत वर्ग में की जाती है। यही बात अन्य शब्दों के बारे में भी लागू होती है।

३. भाववाचक संज्ञा—जिस संज्ञा द्वारा किसी पदार्थ के गुण, दशा, व्यापार, धर्म आदि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—मिठास, बुढ़ापा, लिखावट, बचपन, प्रसन्नता, दुःख, भय, भलाई आदि।

विशेष—भाववाचक संज्ञाएँ तीन प्रकार से बनती हैं—

(१) जातिवाचक संज्ञा से—'लड़का' से लड़कपन, 'मनुष्य' से मनुष्यता, 'मित्र' से मित्रता आदि।

(२) विशेषण शब्द से—'सुन्दर' से सुन्दरता, 'मीठा' से मिठास, 'चौड़ा' से चौड़ाई आदि।

(३) क्रिया शब्दों से—'मिलना' से मिलन, 'पढ़ना' से पढ़ाई, 'चलना' से चाल, 'हंसना' से हंसी आदि।

अभ्यास

१. निम्नांकित वाक्यों में **काले टाइप** वाले शब्द संज्ञा-शब्द हैं। उनके सामने कोष्ठक में यह लिखो कि किस प्रकार की संज्ञा है ?

१—हिमालय हमारे देश का गौरव है। ( )
२—**बचपन** में अच्छी बातें सीखनी चाहिये। ( )
३—**देशभक्ति** हमारा प्रथम कर्तव्य है। ( )
४—तुम **प्रातःकाल** स्कूल जाते हो। ( )
५—मेरी **प्रसन्नता** तुम्हारे पास होने में है। ( )
६—चलो **बाग** में टहल आयें। ( )
७—**स्वाधीनता** हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। ( )
८—**रामचरितमानस** के रचियता **तुलसीदास** थे। ( )
९—**पुष्कर** हिन्दुओं का तीर्थस्थान है। ( )
१०—अन्ततः **सत्य** की विजय होती है। ( )

२. निम्नलिखित कथनों में जो शुद्ध है उनके आगे सही (✓) का निशान लगाओ और जो अशुद्ध है उनके आगे अशुद्धि (X) का निशान अंकित करो।

१—महात्मा गांधी की जन्म-शताब्दी सम्पूर्ण संसार मना रहा था—यहां महात्मा गांधी शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा है। ( )

२—गन्ने की मिठास ही उसका गुण है—यहां मिठास भाववाचक संज्ञा है। ( )

३—मिर्जा गालिब महान् कवि थे—यहाँ कवि शब्द जातिवाचक संज्ञा है। ( )

४—विद्यार्थी को अनुशासन-प्रिय होना चाहिए—यहाँ विद्यार्थी शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा है। ( )

५—मेरी लिखावट अच्छी है—यहाँ लिखावट शब्द जातिवाचक संज्ञा है। ( )

६—भारतवर्ष हमारा देश है—यहाँ देश शब्द जातिवाचक संज्ञा है। ( )

७—संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना शांति के लिए की गई थी—यहाँ शांति शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा है। ( )

८—मेले से खिलौने खरीद लाना—यहाँ खिलौने शब्द जातिवाचक संज्ञा है। ( )

९—व्यापार में लाभ और हानि दोनों होते हैं—यहाँ व्यापार शब्द भाववाचक संज्ञा है। ( )

१०—राष्ट्रीयता की भावना सबमें होनी चाहिए—यहाँ राष्ट्रीयता शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा है। ( )

३. नीचे लिखे वाक्यों में से संज्ञा शब्द छाँट कर उनके आगे लिखो—

१—देशवासियों में देशप्रेम का होना आवश्यक है। ( )

२—पुस्तकें हमारी अभिन्न मित्र हैं। ( )

३—सफलता के लिए श्रम आवश्यक है। ( )

४—रमेश सच बोलता है। ( )

५—गंगा पवित्र नदी है। ( )

४. नीचे लिखे शब्दों से भाववाचक संज्ञाएं बनाओ—

पढ़ना	=	पढ़ाई	लम्बा	=	
मोटा	=	मोटापा	कमाना	=	
मनुष्य	=		मित्र	=	
चलना	=		पुरुष	=	
चतुर	=		सफल	=	

४. सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। जैसे—मैं, तुम, वह आदि।

विशेष—सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है—सर्व का नाम। अर्थात् वे शब्द जो सबके नाम हों, सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे—सुरेश किसी के लिए कह सकता है कि 'वह स्कूल जायगा' और हरीश भी किसी के लिए कह सकता है कि 'वह स्कूल जायगा'। अन्य कोई भी किसी के लिए कह सकता है कि 'वह स्कूल जायगा'। इस प्रकार 'वह' शब्द का प्रयोग सब के लिए हो सकता है, अतः 'वह' सर्वनाम है। सर्वनाम का प्रयोग पुनरुक्ति को दूर करने के लिए किया जाता है। जैसे—'मोहन ने कहा कि मोहन पढ़ेगा' इस वाक्य में 'मोहन' शब्द की पुनरुक्ति हुई है। यदि इसे यों कहा जाय कि 'मोहन ने कहा कि वह पढ़ेगा' तो 'मोहन' शब्द की पुनरुक्ति नहीं होती है और कहने में भी वाक्य ठीक लगता है। इसीलिए संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग होता है।

सर्वनाम के भेद—सर्वनाम छः प्रकार के होते हैं—

१. **पुरुषवाचक सर्वनाम**—जिन सर्वनामों का प्रयोग पुरुष के स्थान पर किया जाता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। दूसरे शब्दों में पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग कहने वाले, सुनने वाले और जिसके सम्बन्ध में कहा जाय, उसके लिए होता है। जैसे—मैं, हम, तू, तुम, वह, वे।

पुरुषवाचक सर्वनाम के पुरुष के आधार पर पुनः तीन भेद किये जाते हैं। वे हैं—

(१) **उत्तम पुरुष**—बोलने वाले के नाम के स्थान पर जो सर्वनाम शब्द प्रयुक्त होता है, उसे उत्तम पुरुष कहते हैं। जैसे—मैं, हम।

(२) **मध्यम पुरुष**—सुनने वाले के नाम के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे—तू, तुम।

(३) **अन्य पुरुष**—जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जाता है, उसके नाम के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को अन्य पुरुष कहते हैं। जैसे—वह, वे, उन।

२. **सम्बन्धवाचक सर्वनाम**—जिन सर्वनामों के द्वारा वाक्यों का
रस्पर सम्बन्ध प्रगट होता है, उन्हें सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—
जो बोयेगा **सो** काटेगा। **जो** करेगा **सो** भरेगा। **जिनका** खाते हो **उनका** काम
करो। इन वाक्यों में काले टाइप वाले शब्द सम्बन्धवाचक सर्वनाम हैं,
योंकि वे दो वाक्यों में सम्बन्ध प्रगट करते हैं।

३. **निश्चयवाचक सर्वनाम**—जिस सर्वनाम के द्वारा किसी निश्चित
स्तु या व्यक्ति की ओर संकेत किया जाता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम
हते हैं। जैसे—आपकी पुस्तक वह है, मेरा स्कूल यह है। इन वाक्यों में
ह और वह शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम हैं क्योंकि इनके द्वारा पुस्तक और
कूल का निश्चित बोध होता है।

४. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम**—जिस सर्वनाम के द्वारा संकेत तो किया
ाता है, किन्तु किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत नहीं होता,
से अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—**कोई** पढ़ रहा है। **कुछ** सुनाई
रहा है। यहां **कुछ** पड़ा हुआ है। इन वाक्यों में **कोई** और **कुछ** शब्द
ानिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

५. **प्रश्नवाचक सर्वनाम**—जिन सर्वनाम शब्दों से प्रश्न का बोध होता
, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—घर में **कौन** जा रहा है? वहाँ
्या हो रहा है? यहाँ **क्या** रखा है? इन वाक्यों में **कौन** और **क्या** प्रश्न-
ाचक सर्वनाम हैं। यहाँ यह भी स्मरणीय है कि **कौन** शब्द मनुष्य या
ाणियों के लिए तथा **क्या** शब्द वस्तुओं के लिए प्रयुक्त हुआ है।

६. **निजवाचक सर्वनाम**—जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग वाक्य के
र्त्ता के लिए होता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। सामान्यतः **आप**
ौर **अपना** शब्द निजवाचक सर्वनाम हैं। जैसे—वह अपने आप परेशान रहता
। मैं अपने आप पढ़ता हूँ। यहाँ आप और अपने शब्दों का प्रयोग निज के
लए किया गया है, इसीलिए ये शब्द निजवाचक सर्वनाम हैं।

विशेष—हिन्दी में सर्वनाम शब्दों का लिंग संज्ञा के अनुसार होता है। सामा-
न्यतः क्रिया के प्रयोग से सर्वनाम के लिंग का बोध हो जाता है।
जैसे—मैं गया। मैं गयी। वह गया। वह गयी। यहाँ प्रथम और तृतीय

वाक्य में प्रयुक्त मैं और वह पुल्लिग है और शेष दोनों वाक्यों के मैं और वह स्त्रीलिंग हैं।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करो—

१—तुम कोई भी हो मुझे इसकी परवाह नहीं है।

२—आपने इतना कष्ट क्यों किया?

३—मैं अपने आप से ही यह प्रश्न करता हूँ कि मैं कौन हूँ?

४—वहां कौन जायगा?

५—वह पुस्तक किसने पढ़ी है?

२. नीचे लिखे वाक्यों में काले टाइप वाले शब्द सर्वनाम है। प्रत्येक वाक्य के सामने कोष्ठक में सर्वनाम का भेद लिखिए—

१—मैं भारत देश का निवासी हूँ। ( )

२—सत्य से कौन मुँह मोड़ेगा। ( )

३—वहां कुछ रखा है। ( )

४—वह पुस्तक मेरी है। ( )

५—जो करेगा सो भरेगा। ( )

६—हमारे साथ मत आओ। ( )

७—यह क्या है। ( )

८—शीला अपने घर गयी। ( )

३. वे, हम, तुम, मैं, हमारी, तू, वह, उनको, उन्हें—पुरुषवाचक सर्वनाम हैं। इनमें से उत्तम, मध्यम एवं अन्य पुरुष सर्वनाम अलग-अलग छांट कर नीचे लिखो—

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष
१.	१.	१. ....
२.	२.	२. ....
३.	३.	३. ....
४.	४.	४. ....
५.	५.	५. ....

४. निम्नांकित कथनों में जो ठीक हैं उनके सामने सही (√) का तथा जो गलत हैं, उनके आगे अशुद्धि (X) का चिह्न अंकित कीजिए—

१—मैं स्कूल जाता हूँ। इस वाक्य में **मैं** पुरुषवाचक सर्वनाम है। ( )

२—वह अपने आपको धोखा दे रहा है। इस वाक्य में **अपने आप** निजवाचक सर्वनाम है। ( )

३—कोई यहां आया होगा। इस वाक्य में **कोई** सम्बन्धवाचक सर्वनाम है। ( )

४—जो पढ़ेगा सो पास होगा। इस वाक्य में **जो** पुरुषवाचक सर्वनाम है। ( )

५—उसको अपने दफ्तर से ही छुट्टी नहीं मिलती। इस वाक्य में **अपने** निजवाचक सर्वनाम है। ( )

६—वह कौन थी? इस वाक्य में **कौन** पुरुषवाचक सर्वनाम है। ( )

७—हमारी गाय यह नहीं है। **यह** शब्द इस वाक्य में अनिश्चयवाचक सर्वनाम है। ( )

८—कोई जा जरूर रहा है। इस वाक्य में **कोई** निश्चयवाचक सर्वनाम है। ( )

९—देशभक्ति हमारा पुनीत कर्त्तव्य है। इस वाक्य में **हमारा** पुरुषवाचक सर्वनाम है। ( )

१०—तुम्हें कहां जाना है? इस वाक्य में **तुम्हें** अनिश्चयवाचक सर्वनाम है। ( )

५. निम्नांकित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति सर्वनाम शब्दों द्वारा करो—

१—क्या..................नहीं आयेंगे?

२—तुम..................पुस्तक से पढ़ लिया करो।

३—मुझे..................पर भरोसा नहीं है।

४—..................आया था।

५—जो परिश्रमी है..................सफल होगा।

५. विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसे—यह सुन्दर कलम है। वह पीली साड़ी है। महेश मोटा लड़का है। हनीफ थोड़ा दूध लाओ। इन वाक्यों में सुन्दर, पीली, मोटा, थोड़ा शब्द विशेषण हैं। ये जिनके विशेषण हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं। जैसे—मैं लाल गुलाब पसन्द करता हूँ। इस वाक्य में लाल विशेषण है और गुलाब विशेष्य है।

विशेषण के भेद—विशेषण छः प्रकार के होते हैं—

१. **गुणवाचक विशेषण**—जो शब्द किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के रूप, रंग या गुण सम्बन्धी विशेषता को प्रकट करते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं। वह सुन्दर गाय है। यह लाल फूल है। उमाकान्त चतुर विद्यार्थी है। इन वाक्यों में सुन्दर, लाल और चतुर शब्द गुणवाचक विशेषण हैं। इसी प्रकार लम्बा, चौड़ा, मोटा, काला, हरा, बुरा, भला, अच्छा आदि शब्द गुण-वाचक विशेषण के उदाहरण हैं।

२. **संख्यावाचक विशेषण**—जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित अथवा अनिश्चित संख्या, क्रम या गणना का बोध कराते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—पांच आदमी, छठी पुस्तक, अनेक मनुष्य, सब लोग आदि। संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं—

(१) **निश्चित संख्यावाचक विशेषण**—जो विशेषण निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, वे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-पांच, सात, पहला, दूसरा आदि। निश्चित संख्यावाचक विशेषण के चार उपभेद होते हैं—

(i) गणनावाचक—जिससे गणना का बोध होता है। जैसे—एक, दो, चार, पाँच आदि।

(ii) क्रमवाचक—जिससे क्रम का बोध हो। जैसे—पहला, दूसरा, पांचवां, आठवां आदि।

(iii) आवृत्तिवाचक—जिससे यह पता लगता है कि विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) कितने गुना है। जैसे—दूना, चौगुना आदि।

(iv) समुदायवाचक—जिससे संख्या के समूह का बोध हो। जैसे—दोनों, तीनों, पांचों आदि।

(२) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण—जो विशेषण किसी निश्चित संख्या का बोध न करायें, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—कई, कुछ, सब, बहुत, थोड़े आदि।

३. परिमाणवाचक विशेषण—जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की नाप-तौल सम्बन्धी विशेषताओं का ज्ञान होता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—थोड़ा दूध, पाव भर चीनी, गज भर कपडा आदि। परिमाणवाचक विशेषण के दो उपभेद होते हैं—

(१) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण—जिससे निश्चित मात्रा या परिमाण का बोध हो, उसे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—पांच सेर, दो गज, तीन तोला, चालीस फुट, सात मीटर आदि।

(२) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण—जिससे अनिश्चित परिमाण का बोध हो। जैसे—थोड़ा दूध, बहुत पानी, जरा सा नमक आदि।

४. संकेतवाचक विशेषण—इसे सार्वनामिक विशेषण भी कहते हैं। वस्तुतः ये सर्वनाम शब्द होते हैं और संज्ञा की ओर संकेत करते हैं। जैसे—यह पुस्तक मेरी है। वह मकान तुम्हारा है। वे दिन बीत गये। इस गेंद को मत छुओ। इन वाक्यों में यह, वह, वे, इस शब्द क्रमशः पुस्तक, मकान, दिन और गेंद नामक संज्ञाओं की ओर संकेत करते हैं। इसीलिए ये संकेतवाचक विशेषण हैं।

५. व्यक्तिवाचक विशेषण—जो विशेषण व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बनते हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—जापानी गुड़िया, बीकानेरी भुजिया, अमृतसरी शाल, काश्मीरी मेव, भारतीय दर्शन आदि।

६. भिन्नतावाचक विशेषण—भिन्नता को प्रकट करते हुए संज्ञा की विशेषता बताने वाले विशेषण को भिन्नतावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—इस कक्षा के प्रत्येक बालक को बुलाओ। हमारे स्कूल का हर एक विद्यार्थी अनुशासनप्रिय है। इन वाक्यों में प्रत्येक और हर एक शब्द भिन्नतावाचक विशेषण हैं।

विशेषण की तीन अवस्थाएं—विशेषण की तीन अवस्थाएं (Degrees) होती हैं, जिनका बोध तुलना द्वारा होता है। तुलना का अर्थ है-विभिन्न वस्तुओं के गुणों का मिलान। जैसे—प्रिय, प्रियतर और प्रियतम। लघु, लघुतर और लघुतम। इस प्रकार हम देखते हैं कि वस्तुओं के गुणों की तुलना तीन अवस्थाओं में की जाती है। इन्हीं को विशेषण की तीन अवस्थाएं कहते हैं। वे ये हैं—

(१) मूलावस्था (Positive Degree)—विशेषण शब्द की मूल दशा को जिसमें वह सामान्य रूप में रहता है, मूलावस्था कहते हैं। जैसे—लघु, प्रिय, श्रेष्ठ आदि शब्द।

(२) उत्तरावस्था (Comparative Degree)—जहां दो वस्तुओं या व्यक्तियों की तुलना करके एक को दूसरे से अधिक या कम बताया जाता है, वहां विशेषण की उत्तरावस्था होती है। जैसे-लघुतर, प्रियतर, श्रेष्ठतर। अथवा यों कहा जाय कि—पिताजी सुरेश को रमेश से प्रियतर समझते हैं। बकरी गाय से श्रेष्ठतर पशु है।

(३) उत्तमावस्था (Superlative Degree)—यह विशेषण की वह अवस्था है जिसमें अनेक वस्तुओं या व्यक्तियों की तुलना करके किसी एक को सबसे अधिक श्रेष्ठ या कम बताया जाता है। जैसे—लघुतम, प्रियतम, श्रेष्ठतम। अथवा यों कहा जाय कि—अपने सभी पुत्रों में शीलभद्र को पिताजी प्रियतम मानते हैं। सभी पशुओं में गाय श्रेष्ठतम पशु है।

विशेष—यहां यह स्मरणीय है कि विशेषण की अवस्थाएँ केवल गुणवाचक विशेषण में ही होती हैं क्योंकि तुलना गुणों की ही होती है।

अभ्यास

१. निम्नांकित वाक्यों में मोटे टाइप में छपे हुए शब्द विशेषण हैं। प्रत्येक वाक्य के सामने कोष्ठक में विशेषण का नाम (भेद) लिखो—

१—मुझे जापानी खिलौने पसन्द हैं। ( )

२—इस गाय को शहर ले जाओ। ( )

३—कक्षा के प्रत्येक वालक को बुलाओ। ( )
४—मैं तुम्हें **पांच** पेंसिलें दूंगा। ( )
५—हरीश सुरेश से **दुगुना** काम करता है। ( )
६—मुझे **थोड़ा** दूध और पिला दो। ( )
७—**पके** आम किसे पसन्द नहीं आयेंगे ? ( )
८—अरे ! तुम **सारे** फल खा गये। ( )
९—काला गुलाव भी अच्छा लगता है। ( )
१०—**जयपुरी** मूर्तियां सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। ( )

२. निम्नलिखित कथनों में जो सही है, उनके आगे सही (✓) का निशान और गलत के आगे गलती (×) का निशान लगाओ—

१—यह काला घोड़ा है। यहां **काला** गुणवाचक विशेषण है। ( )
२—मेरे पास थोड़ी सी पुस्तकें हैं। यहां **थोड़ी सी** संख्यावाचक विशेषण है। ( )
३—तुमसे चौथा लड़का आगे-आगे चलेगा। इस वाक्य में **चौथा** संख्यावाचक विशेषण है। ( )
४—निर्मला ने कक्षा में पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया है। यहां **पांचवाँ** परिमाणवाचक विशेषण है। ( )
५—वीकानेरी भुजिये वड़े स्वादिष्ट होते है। यहां **वीकानेरी** गुणवाचक विशेषण है। ( )
६—देश-भक्ति हर एक देशवासी का पुनीत कर्त्तव्य है। इस वाक्य में **हर एक** संख्यावाचक विशेषण है। ( )
७—वह निर्धन व्यक्ति है। यहां **निर्धन** भिन्नतावाचक विशेषण है। ( )
८—सैकड़ों छात्रों ने परेड में भाग लिया। यहां **सैकड़ों** संख्यावाचक विशेषण है। ( )
९—समारोह में अधिकतर वालक ही उपस्थित थे। यहां **अधिकतर** संख्यावाचक विशेषण है। ( )